International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN -2250-253X, (Print), E-ISSN 2320-544X, Issued – 8, Vol- I, August, 2013

शोध पत्र- हिन्दी

प्रेमचन्द चिन्तन पर गाँधी वादी प्रभाव

* अनीता देवी

* सहाप्राध्यापक राजकीय महाविद्यालय, जीन्द

प्रेमचन्द युग क्रान्तिकारी एवं गांधीवादी युग था। गांधी ऐसे चरित्र थे जिन्होंने समाज के हर वर्ग को किसी न किसी रूप में अवश्य प्रभावित किया फिर चाहे वह कोई भी वर्ग हो। किसान, दलित, राजनेता साहित्यकार या फिर सरकारी नौकर। प्रेचन्द का युग ऐसा युग था जो परपंरागत रूढ़ियों पुराने रीति–रिवाजो पर रूढ़िवादी संस्कारों के विरूद्ध थे तथा उन विचारों से साहित्याकार भी प्रभावित हुए बिना नही रह सके। वे कलम के मजदूर थे। इसलिए उन्होंने गांधी चिन्तन के अनुरूप ही नारी वर्ग की विभिन्न समस्याओं को धर्म एंव जातिगत भेदभाव, सामाजिक स्थिति, किसान व दलित वर्ग की दयनीय स्थिति आदि विशयों को अपने साहित्य की कथावस्तु बनाया।

गांधी जी ने देश की चेतना को जगा दिया था। राजनीति में उनके प्रदर्षण से भारत को राष्ट्रीय जीवन से प्राणों का संचार हो रहा था। उनसे प्रभावित होकर ही प्रेमचन्द जी ने सरकारी नौकरी से भी अपना त्यागपत्र दे दिया। शिवरानी देवी जो उनकी आदर्श पत्नी थी उन्हें हार पहनाती और नमक बनाने के लिए भेजती। वे गांधी जी से प्रभावित अवश्य थें, किन्तु प्रेमचन्द ने उनका अंधानुकरण करके अपने विचारों का भी समावेश किया।

प्रेचन्द जी की धारणा थी की आम जनता ही देश को स्वाधीन करवा सकती है। उस समय जनता की चेतना को जगाने के लिए साहित्य ही वह सशक्त माध्यम था और प्रेमचन्द जी ने उस माध्यम का भरपूर प्रयोग किया। प्रेमचन्द का 'रंगभूमि' उपन्यास राष्ट्र के स्वाधीनता संग्राम की व्यापक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। देश की राजनीति में जो कार्य गांधी जी ने किया वही कार्य साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचन्द के उपन्यास रंगभूमि ने किया। इस उपन्यास में एक छोटे से गांव की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर स्वाधीनता संग्राम के संघर्ष को चित्रित किया गया है।

गाँधी वादी विचारों के अनुसार ही प्रेमचन्द रंगभूमि में अपने नायक को ठोस दीवार की भाँति शत्रु सेना के समक्ष खड़ा कर देते है। इस उपन्यास का नायक सूरदास है जो किसी भी दलील को नहीं सुनता और अपने फैसले पर अडिग रहता है। रंगभूमि उपन्यास में सूरदास ने गाँधी का अनसरण करते हुए जिस अहिंसात्मक असहयोग का सहारर लिया था वह अब हिंसक रूप धारण कर चुका था। वह भीड़ को समझाने के लिए भैरों के कंधे पर बैठकर ऊँची आवाज में कहता हैं, 'मैं हाकिमों को दिखा देता कि एक अंध आदमी फौज को कैसे पीछे हटा देता है, तोप का मूँह कैसे बंद कर देता है, तलवार की धार कैसे मोड़ देता हैं, तलवार की धार कैसे तोड़ मोड़ देता हैं, मैं धर्म के बल से लड़ना चाहता था। इन पंक्तियों में प्रेमचन्द के विचारों पर गांधी जी के विचारों का प्रभाव स्पष्टतया की दीख जाता हैं।

अंत में रंगभूमि का नायक कलार्क की गोली से घायल होकर नीचे गिर जाता है। सूरदास की अंहिसा त्याग, बलिदान, दया आदि गुणों के सामने स्वय राजा साहब भी नत मस्तक हो जाते हैं। गांधी जी ने कहा भी है। ''असहयोगी की सर्वोच्च स्थिति वह हैं, जब वह हिंसा को रोकने के प्रयत्न में अपने प्राण दे देता है।'' रंगभूमि का नायक सूरदास भी यही कर दिखाता है। इस उपन्यास में इंद्रदत सूरदास और विजय इन तीनों के मृत्य वरण में गांधी का आदर्श ही झलकता है। गांधी जी के अनुसार 'देश के लिए मर जाना एक वीरतापूर्ण कार्य है।

गांधी जी ने अपने स्वराज्य के स्वर को जन–जन तक पहुँचाना चाहते थे। उन्होंने अपने इस स्वर को सशक्त करने के लिए राजनीतिक सहारा लिया तो प्रेमचन्द जी ने अपने साहित्य के माध्यम से इस स्वर को वाणी दी। उनके हर उपन्यास में कही स्वराज्य का स्वर जरूर सुनाई पड़ता है। उनके सभी पात्र संघर्ष के लिए आगे बढ़ते है और जी जान से जूझते हुए कर्म पर पर 'आदर्श विरोध' में स्वराज्य का आशय गांधी जी के अनुरूप ही स्पष्ट करते हुए कहा हैं।

भारत के उद्धार का कोई उपाय है तो वह स्वराज्य है जिसका आशय है। मन और वचन की पूर्ण सवाधीनता।

हमारे देश जातिगत भेदभाव की एक गम्भीर समस्य है जो प्रेमचन्द युग में विधमान थी। गांधी जी वर्ण–व्यवस्था के विरोधी थे। इस समय दलित वर्ग की बड़ी दयनीय स्थिति बनी हुई थी। उनकी स्थिति को सुधारने के लिए गांधी जी ने उन्हें 'हरिजन' का नाम दिया उनकी बस्ती में जाकर रहे। उनकी दृश्टि में अस्पृश्यता हिन्दू–जाति के लिए कलंक है। उन्होंने सभी वर्णो को जन्म प्रधान न मानकर धर्म प्रधान बताया।

गांधी जी के इन विचारों को प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में भरपूर स्थान दिया। उन्होंने दलितों की पीड़ा और शोषण का अनुभव किया। इसी समस्या से निपटने के लिए प्रेमचन्द ने अन्धे चमार सूरदास' को अपने उपन्यास 'रंगभूमि' का नायक बनाकर क्राति का प्रारम्भ किया। इसी तरह 'गोदान' का होरी'

जात–पात के बंधनों को तोड़कर उपन्यास का केन्द्रीय पात्र बन गया। 'गोदान' के पात्र मातादीन को भी अन्त में अपने धार्मिक आडम्बरों से ब्राहमण नहीं, चमार ही रहना चाहता हूँ। प्रेमचन्द जी सच्चे अर्थो में मानवतावादी थे। वे धर्म के नाम पर होने वाले झगड़ो के विरोध में थे। इसलिए वे गांधी जी के हदय परिवर्तन के सिद्धान्त को अपनाते हैं। उनकी दृष्टि में साम्प्रदायकिता एक पाप हैं, जिसका कोई प्रायश्चित नहीं।

गांधी जी ने कहा था कि जब तक देश में साप्रदायिक भिन्नता रहेगी तब तक देश उन्नति के बारे में सोच भी नही सकता। प्रेमचन्द ने लिखा है।

'धर्म और ज्ञान दोनों एक हैं और इस दृष्टि से संसार में केवल एक धर्म है। भिन्न–भिन्न स्वार्थो के दल है जिनसे हानि के सिवा आज तक किसी को लाभ नहीं हुआ।

तत्कालीन समय में परम्परागत सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के हास के कारण भारतीय समाज पतन की और अग्रसर हो रहा था। समाज में चारों और रूढ़ियों, मिथ्याडम्बरों को बोलबाला था। ऐसे में नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। दहेज प्रथा बाल–विवाह अनमेल विवाह जैसे अनेक कुप्रथाए सामाजिक सरोकार को खोखला कर रही थी। गांधी जी ने स्त्री–पुरूष को समान अधिकार देते हुए नारी–शिक्षा पर विशेष जोर दिया। गांधी जी ने जहाँ विधवा–विवाह के समर्थन दिया वहीं बाल–विवाह को सिरे से नकार दिया। बाल–विवाह के कारण ही वेश्यावृति को बढ़ावा मिलता है। प्रेमचन्द के अनुसार 'यादि नारी जाति का उद्धार करना चाहते हो तो यह आवश्यक है कि पहले वेश्याओं का उद्धार किया जाए। उन्होंने इस गम्भीर समस्या का समाधान अपने उपन्यास 'सेवासदन' में बखूबी किया है।

प्रेमचन्द गांवो से बड़ा स्नेह रखते थे। किन्तु पूंजीपति लोग अपने लाभ के लिए गांवो को नष्ट कर रहे थे। प्रेमचन्द ने औधोगिकरण के भयावह परिणाम को 'रंगभूमि के बड़े अच्छे ढंग से प्रदर्शित किया है। इससे बजरंगी, जगधर जैस लोग बेरोजगार और बेघर हो जाते हैं।

प्रेमचन्द गांधी वादी विचारो से प्रभावित अवश्य थे किन्तु उन्होंने मात्र अंन्धानुकरण नही किया बल्कि अपने निज विचारों के साथ उनका सामंजस्य बिढ़ाया। गांधी जी के अनुयायी होने के कारण वे अच्छी तरह समझ गए थे कि वे जो कुछ लिख रहे हैं वह स्वतन्त्रता की लड़ाई के आगे बढ़ाने तथा स्वराज्य को नजीदक लाने में अति महत्वपूर्ण है। प्रेमचन्द की औपन्यासिक चेतना का विकास गांधी युग में हुआ इसमें संदेह नही है। किन्तु 'गोदान' में उनका गांधी वादी चिंतन से हम मोह भंग पाते है। फिर भी उनके समस्त साहित्यक विवेचन से हम पाते है कि वे गांधी चिंतन से व्यापक रूप से प्रभावित थे।